सच्चाई के दम पर जोश के साथ...

RNI No: UPHIN/2023/86769

www.swarajindianews.com

swarajindia2023@gmail.com swarajindianews swarajindianews

मूल्य: ₹ 02

सांध्यकालीन समाचार पत्र

स्वराज इंडिया

कानपुर, शनिवार, 05 जुलाई, 2025

वर्ष: 02, अंक: 182, पृष्ठ: 8+4

इनसाइड केडीए वीसी की आंखों में धूल झोंक रहे केयर टेकर प्रभारी » Pg 03

सेनेटरी पैड में राहुल गांधी की फोटो लगाने पर सियासी संग्राम

» Pg 12

अखिलेश यादव के लिए 2027 का सफर बना कड़ा इम्तिहान

पीडीए में उलझी सपा के लिए एम-वाई गठजोड़ बनी नई चुनौती

लखनऊ। 2024 लोकसभा चुनाव में शानदार प्रदर्शन और 37 सीटों की जीत के बाद समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव एक बार फिर उत्तर प्रदेश की सियासत के केंद्र में हैं। मगर यह जीत जितनी बड़ी थी, उतनी ही जटिल चुनौतियों को भी जन्म दे गई है। पीडीए यानी पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक समीकरण को अपना सियासी अस्त्र बनाने वाली सपा अब अपने पुराने एम-वाई (मुस्लिम-यादव) फार्मूले की बंदिशों में उलझती दिख रही है।

2024 में कांग्रेस के साथ गठबंधन और सामाजिक समीकरणों की सधी रणनीति के चलते सपा ने 2019 के पांच सीटों से छलांग लगाकर 37 सीटें जीत लीं। लेकिन इस जीत के बाद भी सवाल यही है कि क्या अखिलेश यादव 2027 में 'मिशन 300' का सपना पूरा कर पाएंगे या फिर जातिगत उलझनों में एक बार फिर उलझ जाएंगे?अखिलेश यादव ने 2024 में जिस पीडीए फार्मूले को धार दी, उसने दलित, पिछड़ा और अल्पसंख्यक समुदाय को जोड़ने का काम किया। लेकिन इस फार्मूले की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि इसमें सवर्ण और गैर-ओबीसी वर्ग खुद को हाशिए पर महसूस करता है। सपा ने 'समावेशी राजनीति' का संदेश देने की कोशिश की। पोस्टर लगाए गए "हम जातिवादी नहीं, पीडीए वादी हैं।" लेकिन यह संदेश उल्टा पड़ गया। बीजेपी ने इसे "दुहरी राजनीति" बताते हुए प्रचारित किया कि अखिलेश यादव न तो सवर्णों के साथ हैं और न ही सच में दलितों के।

कहां उलझ रही है रणनीति?

- **ठाकुर बनाम ब्राह्मण नैरेटिव:** इटावा के कथा वाचक विवाद को 'ब्राह्मण बनाम यादव' रंग देने की कोशिश की गई।
- **दलित-ठाकुर तनाव:** करणी सेना द्वारा सपा सांसद रामजीलाल सुमन के घर हमला हो या राणा सांगा टिप्पणी–हर विवाद को जातिगत खांचे में बांधने की कोशिश की गई।
- **कोर वोट बैंक की मजबूरी:** यादव और मुस्लिम सपा का स्थायी आधार हैं, लेकिन सिर्फ इन दो वर्गों पर निर्भरता नाकाफी हो सकती है।

दलित खिसकते, पिछड़े बंटते, अल्पसंख्यक स्थिर

- **पिछड़े (पी):** यादवों के अलावा ओबीसी में सपा की पकड़ कमजोर है। कुर्मी, लोध, निषाद जैसी जातियां बीजेपी के साथ लगातार जुड़ी रही हैं।
- **दलित (डी):** बसपा के कमजोर होने से कुछ दलित वोट जरूर सपा की ओर आए, लेकिन कोई स्थायी ध्रुवीकरण नहीं बन पाया।
- **अल्पसंख्यक (ए):** मुस्लिम वोटर अखिलेश के साथ मजबूती से हैं, लेकिन सपा की यही छवि बीजेपी को "एम-वाई पार्टी" का नैरेटिव चलाने में मदद करती है।

बदलनी होगी छवि विरोधियों की रणनीति रही असरदार

बीजेपी 2017 से लगातार सपा को 'माफियाओं की पार्टी', 'गुंडाराज की प्रतीक', और 'जातिवादी पार्टी' के रूप में पेश करती रही है। 2024 की जीत के बावजूद, अखिलेश यादव के जन्मदिन पर लगे पोस्टरों में उन्हें ब्राह्मण-विरोधी, दलितों का उपयोगकर्ता, और अराजकता का नायक बताया गया। यह सवर्ण और गैर-ओबीसी वोटरों को मनोवैज्ञानिक तौर पर सपा से दूर करने की रणनीति है, जो 2017 और 2022 में असरदार रही थी।

अखिलेश की दुविधा

2024 में मिली बढ़त ने मजबूती दी है, असली परीक्षा 2027 में

सही रास्ता कौन सा? पुरानी रणनीति या समावेशी सामाजिक गणबंधन

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

सपा को यह तय करना होगा कि वह अपनी कोर ताकत (यादव-मुस्लिम) पर ही निर्भर रहेगी या एक समावेशी सामाजिक गठबंधन बनाकर नए वोटरों को जोड़ने की कोशिश करेगी।

अगर वह पहली राह चुनती है तो बीजेपी की ब्राह्मण-ठाकुर-ओबीसी केंद्रित रणनीति उन्हें घेर लेगी। और अगर दूसरी राह चुनती है, तो कोर वोट बैंक की नाराजगी का खतरा उठाना होगा।

» पीडीए के सहारे आगे बढ़ने की योजना तभी सफल होगी, जब सपा एम-वाई से बाहर निकल विश्वसनीय विकल्प के रूप में खुद को पेश कर पाए

2024 में मिली बढ़त ने अखिलेश यादव को सियासत में मजबूती दी है, लेकिन उनकी असली परीक्षा अब 2027 में है। पीडीए के सहारे आगे बढ़ने की योजना तभी सफल होगी, जब सपा एम-वाई से बाहर निकलकर एक समावेशी, संतुलित और विश्वसनीय विकल्प के रूप में खुद को पेश कर पाए। वरना बीजेपी के लिए उन्हें 'वोट बैंक की राजनीति' में उलझा नेता साबित करना कोई मुश्किल नहीं होगा। 2027 का मिशन तभी पूरा होगा, जब रणनीति न केवल जातीय समीकरणों को साधे, बल्कि भरोसे का दायरा भी बढ़ाए।

2027 का टारगेट पर रणनीति बिखरी हुई

- 'मिशन 300' का ऐलान कर चुके अखिलेश यादव के लिए यह वक्त आत्मचिंतन का है।
- क्या केवल एम-वाई से मिशन 300 संभव है?
- क्या पीडीए का जिक्र कर, लेकिन व्यवहार में एम-वाई तक सीमित रहकर 300 सीटें पाई जा सकती हैं?
- क्या दलितों और सवणोंर्ं को बिना आहत किए उन्हें भरोसे में लिया जा सकता है?
- इन सवालों के जवाब खोजे बिना सपा का सत्ता में लौटना मुश्किल दिखता है।

स्वराज इंडिया की खबर का असर.....

24 घंटे में शुरू हो गई सुक्खापुरवा स्कूल की बिजली आपूर्ति

» नलकूपों को दी जाने बिजली से शुरू की आपूर्ति

» देखना है कब तक खंभों में बिछ पाते हैं तार

स्वराज इंडिया संवाददाता

बिल्हौर (कानपुर)। सुक्खापुरवा इंग्लिश मीडियम प्राइमरी अस्थाई समाधान हो गया है। स्वराज इंडिया में प्रकाशित खबर का संज्ञान लेते हुए विद्युत विभाग के

04 जुलाई, 2025

| का अधिकार अधिनियम बन गया मजा

| प्राइमरी स्कूल के लिए बिजली बनी सपना

...य कभी नहीं मिलती

...ा हुआ बिजली संकट

...ए लेकिन तार बंधवाने ...हीं

...ड्या संवाददाता ... में बैठे अधिकारी बच्चों के ... है इसका अंदाजा खडेचा ...कूल बिजली व्यवस्था को ...ाया जा सकता है। करीब ...स्कूल के समय बिजली ... विद्यालय मिड डे मील ...रा गई है। उमस भरी ... बच्चे पंखे न चल पाने के ...ा रहे हैं लेकर कोई

...ाबिक अंग्रेजी माध्यम के ... विद्यालय को घरेलू ...ाने के चलते नलकूपों को

ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों की पहल पर स्कूल को घरेलू बिजली देने के लिए खंभे लगवा दिए लेकिन जब खंभों में केबिल लगने की बारी आई तो बजट की कमी आड़े आ गई और बिजली आपूर्ति का मामला अधर में लटक गया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने छह महीने में कई बार जेई से बात की।

इस बीच दो जेई भी बदल गए। लेकिन स्कूल की समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ। अब आलम यह कि बारिश का मौसम चल रहा है। ऐसे में खेतों को पानी की कोई जरूरत नहीं है। इसलिए सिंचाई के काम में लगे नलकूपों को जब तब ही चलाया जा रहा है। इसके लिए कोई समय निर्धारित नहीं है।

आम तौर पर यह स्कूल के समय चलते ही नहीं हैं। जिसके कारण बिजली पर निर्भर स्कूल की पानी की टंकी तक नहीं भर पा रही है। मिड डे मील और बच्चों के पीने के लिए दूर दूर से पानी लाना पड़ रहा है। जो कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम की धज्जियां उड़ाता है। इसके बावजूद बिजली विभाग के अधिकारी कान में तेल डाले हुए हैं।

नहीं सुन रहे बिजली विभाग के अधिकारी- प्रधानाध्यापक

इंग्लिश मीडियम स्कूल सुक्खापुरवा के प्रधानाध्यापक आलोक कुमार का कहना है कि उन्होंने बिजली व्यवस्था सुचारू से संचालित कराने के लिए काफी प्रयास किए। जिसके चलते खंभे लगवा दिए गए। उन्होंने बताया कि करीब 400 मीटर लंबी लाइन डाली जानी है। जिसके लिए ठेकेदार कह रहा है कि तार नहीं है।

अधिकारियों ने शनिवार को स्कूल समय में नलकूपों को मिलने वाली आपूर्ति चालू कर दी। जिससे स्कूल के बच्चों को काफी राहत मिली है। हालांकि ठूंठ बने खंभों में तार बिछने का मामला अभी भी खटाई में है।

गौरतलब है कि शुक्रवार को दैनिक स्वराज इंडिया ने इंग्लिश मीडियम प्राइमरी स्कूल सुक्खापुरवा में गहराए विद्युत और जल संकट की ओर बिजली विभाग के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया था। 24 घंटे के अंदर ही सक्रिय हुए अधिकारियों ने नलकूपों को मिलने वाली आपूर्ति स्कूल के समय शुरू करा दी।

हलचल खबर का असर

जिससे स्कूल को फिलहाल फौरी तौर पर राहत मिल गई है। देखना है विभागीय अधिकारी समस्या का स्थायी समाधान करने के लिए छह महीने से खड़े बिजली के खंभों में तार कब तक बिछवा पाते हैं।

मामूली बात पर भिड़े दो सगे भाई, पुलिस ने शांतिभंग में जेल भेजा

स्वराज इंडिया संवाददाता

बिल्हौर (कानपुर)। थाना बिल्हौर के अंतर्गत ग्राम नानामऊ में आपसी विवाद ने उग्र रूप ले लिया जब चन्द्र भूषण अपने भाई शशिभूषण से ज़मीन के बंटवारे सहित अन्य पारिवारिक मसलों को लेकर भिड़ गया। मामला इतना बढ़ गया कि दोनों के बीच जमकर झगड़ा और गाली–गलौज शुरू हो गई। पुलिस के समझाने–बुझाने के बावजूद चन्द्र भूषण नहीं माना और अधिक उत्तेजित होकर लोगों के बीच में अशांति फैलाने लगा। मौके पर पहुंची पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए उसे शांति भंग के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। कोतवाल अशोक कुमार सरोज ने बताया कि शांति भंग की कार्रवाई करते हुए आरोपी को 14 दिन के लिए जेल भेजा गया है। कहा कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों के खिलाफ सख्त रवैया अपनाया जाएगा।

डबल लेयर गैस टैंकों की अनदेखी से बड़ा खतरा

» उर्वरक इकाइयों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर/लखनऊ। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की कई उर्वरक इकाइयों में दशकों पुराने डबल लेयर गैस टैंक गंभीर सुरक्षा खतरे का कारण बनते जा रहे हैं। अमोनिया, एलपीजी और एथिलीन जैसी अत्यधिक ज्वलनशील गैसों के भंडारण में प्रयोग हो रहे ये टैंक नियमित फिटनेस जांच और प्रमाणिक मेंटेनेंस ऑडिट से पूरी तरह वंचित हैं। फूलपुर की इफको यूनिट, कानपुर की केएफसीएल, अमेठी की इंडोरामा, शाहजहांपुर-बबराला और मध्य प्रदेश के विजयपुर स्थित एनएफएल यूनिट जैसे कई प्लांट्स में इन टैंकों की हालत संदेह के घेरे में है। हालात इतने चिंताजनक हैं कि हाल ही में कुछ यूनिटों को आपात स्थिति में बंद करना पड़ा।

संवेदनशील तकनीक, लेकिन कोई मान्यता प्राप्त टेस्ट नहीं

विशेषज्ञों के अनुसार, डबल लेयर टैंकों की सुरक्षा इंटर–टैंक स्पेस, इंसुलेशन मटेरियल, वाल्व, और पाइपलाइन फिटनेस पर निर्भर होती है। फिर भी भारत में इनकी नॉन–डिस्ट्रक्टिव टेस्टिंग (हष्ठञ्), अल्ट्रासोनिक थिकनेस मापन, और वैक्यूम लीकेज टेस्टिंग जैसी अंतरराष्ट्रीय मानकों की जांचें नहीं कराई जातीं।20–30 साल पुराने ये टैंक संभावित रिसाव या विस्फोट का गंभीर खतरा पैदा कर सकते हैं, खासकर तब जब वे आवासीय बस्तियों के नजदीक स्थापित हैं।

प्रशासनिक चुप्पी और जिम्मेदारी का सवाल

यह स्थिति तब और चिंताजनक हो जाती है जब न तो फैक्ट्री प्रबंधन, न ही निरीक्षण एजेंसियां और न ही शासन इन टैंकों की फिटनेस पर जवाबदेही तय करने को तैयार दिखते हैं। अगर किसी दुर्घटना में जनहानि होती है तो जिम्मेदारी किसकी होगी?

विशेषज्ञों की मांग- लाइफ सर्टिफिकेट हो सार्वजनिक

नाम न छापने की शर्त पर एक अधिकारी ने बताया कि हर गैस टैंक का लाइफ सर्टिफिकेट, हष्ठञ् रिपोर्ट और मेंटेनेंस ऑडिट सार्वजनिक होना चाहिए। श्रम विभाग, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और औद्योगिक सुरक्षा निदेशालय की साझा निगरानी में एक फिटनेस अप्रूवल सिस्टम विकसित करने की आवश्यकता है। विशेषज्ञों ने केंद्र सरकार से मांग की है कि वह जल्द से जल्द गैस स्टोरेज सेफ्टी कोड लागू करे। अन्यथा यह लापरवाही कभी भी बड़ी औद्योगिक त्रासदी का कारण बन सकती है।

केडीए वीसी की आंखों में धूल झोंक रहे केयर टेकर प्रभारी

» केडीए के केयर टेकर अनुभाग में कार्य पहले, टेंडर बाद में निकालने पर खुली भ्रष्टाचार की पोल

» केडीए में पोर्टिको फार सीलिंग और रिकार्ड रूम मरम्मत कार्य पहले ही हो चुका, मिलीभगत कर निकाला गया टेंडर

» केयर टेकर में फर्जी फाइलें बनाकर धन का बंदरबांट

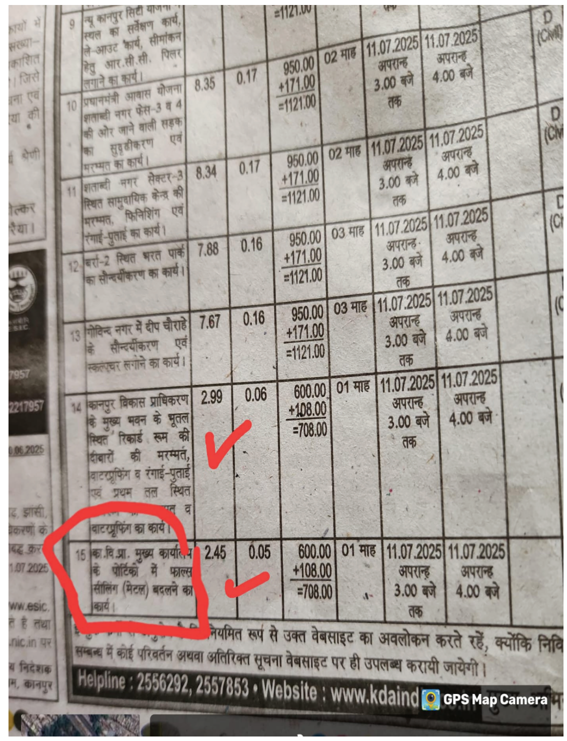

9	न्यू कानपुर सिटी योजना ... स्थल का सर्वेक्षण कार्य, ले-आउट कार्य, सीमांकन हेतु आर.सी.सी. पिलर लगाने का कार्य।			=1121.00			
10	प्रधानमंत्री आवास योजना शताब्दी नगर फेस-3 व 4 की ओर जाने वाली सड़क का सुदृढ़ीकरण एवं मरम्मत का कार्य।	8.35	0.17	950.00 +171.00 =1121.00	02 माह	11.07.2025 अपरान्ह 3.00 बजे तक	11.07.2025 अपरान्ह 4.00 बजे
11	शताब्दी नगर सेक्टर-3 स्थित सामुदायिक केन्द्र की मरम्मत, फिनिशिंग एवं रंगाई-पुताई का कार्य।	8.34	0.17	950.00 +171.00 =1121.00	02 माह	11.07.2025 अपरान्ह 3.00 बजे तक	11.07.2025 अपरान्ह 4.00 बजे
12	बर्रा-2 स्थित भरत पार्क का सौन्दर्यीकरण का कार्य।	7.88	0.16	950.00 +171.00 =1121.00	03 माह	11.07.2025 अपरान्ह 3.00 बजे तक	11.07.2025 अपरान्ह 4.00 बजे
13	गोविन्द नगर में दीप चौराहे के सौन्दर्यीकरण एवं स्कल्पचर लगाने का कार्य।	7.67	0.16	950.00 +171.00 =1121.00	03 माह	11.07.2025 अपरान्ह 3.00 बजे तक	11.07.2025 अपरान्ह 4.00 बजे
14	कानपुर विकास प्राधिकरण के मुख्य भवन के भूतल स्थित रिकार्ड रूम की दीवारों की मरम्मत, वाटरप्रूफिंग व रंगाई-पुताई एवं प्रथम तल स्थित ... व वाटरप्रूफिंग का कार्य।	2.99	0.06	600.00 +108.00 =708.00	01 माह	11.07.2025 अपरान्ह 3.00 बजे तक	11.07.2025 अपरान्ह 4.00 बजे
15	का.वि.प्रा. मुख्य कार्यालय के पोर्टिको में फाल्स सीलिंग (मेटल) बदलने का कार्य।	2.45	0.05	600.00 +108.00 =708.00	01 माह	11.07.2025 अपरान्ह 3.00 बजे तक	11.07.2025 अपरान्ह 4.00 बजे

...नियमित रूप से उक्त वेबसाइट का अवलोकन करते रहें, क्योंकि निवि... सम्बन्ध में कोई परिवर्तन अथवा अतिरिक्त सूचना वेबसाइट पर ही उपलब्ध करायी जायेगी।

Helpline : 2556292, 2557853 • Website : www.kdaind...

प्रमुख संवाददाता, स्वराज इंडिया

कानपुर। केडीए-कानपुर विकास प्राधिकरण में भ्रष्टाचार पर नियंत्रण नहीं हो पा रही है। प्रवर्तन, सेल से लेकर इंजीनियरिंग अनुभाग में फर्जी फाइल बनाकर सरकारी खजाने को चूना लगाया जा रहा है। अधिकारी जांच के नाम पर धांधलियों पर पर्दा डालने का खेल कर रहे हैं। केयर टेकर प्रभारी द्वारा कार्य पहले कराकर बाद में टेंडर निकालकर फंस गए हैं। इस मामले में शासनस्तर तक शिकायत पहुंची है। ऐसे में कई अधिकारी और कर्मी जांच के घेरे में हैं।

केयर टेकर प्रभारी अतुल राय के द्वारा उपाध्यक्ष मदन सिंह गर्ब्याल और योगी शासन को कैसे गुमराह कर रहे हैं।

इसका खुलासा टेंडरों की हेरीफेरी से हुआ है। केडीए मुख्यालय के पोर्टिको में फाल सीलिंग लगाने का कार्य 3 माह पूर्व हो चुका है लेकिन 2 जुलाइ 2025 को निकले टेंडर में क्रम संख्या 15 में 2 लाख 45 हजार रूपए से कार्य कराए जाने का जिक्र है। वहीं, पोर्टिको की छत मरम्मत के नाम पर सिर्फ फॉल–सीलिंग टांग दी गई हैं, जब कि छत की सरिया भी दिख रही थीं उनपर प्लास्टर करना भी जरूरी नहीं समझा गया।

इसी तरह से केडीए के रिकार्ड रूम की रंगाई पुताई और मरम्मत के नाम पर टेंडर विज्ञापन क्रम संख्या 14 में 2 लाख 99 हजार रूपए का टेंडर निकाला गया। यह कार्य भी पहले ही हो चुका है। इस तरह से केयर टेकर में मरम्मत और आपूर्ति के नाम पर लगातार फर्जी फाइलें बनाकर सरकारी धन का बंदरबांट किया जा रहा है।

केयर टेकर में चल रहे फर्जी वाडे का मामला उच्चस्तर तक है। केयर टेकर अनुभाग में पहले भी डीजल घोटाला कांड हो चुका है। इसमें बिना जेनसेट चले ही डीजल खरीद के नाम पर लाखों रूपयों का भुगतान ले लिया गया था। इसकी शिकायत तत्कालीन कर्मचारी नेता बचाउ सिंह के द्वारा की गई थी इसपर कई इंजीनियरों पर कार्रवाई हुई थी। कई वरिष्ठ अधिकारियों पर कार्रवाई के लिए प्रकरण अभी भी शासन में लंबित है।

-मामले की जानकारी हुई है, केयर टेकर अनुभाग में निकाले गए टेंडर को लेकर जांच करा रहे हैं। दोषियों पर कार्रवाई अवश्य की जाएगी।

मदन सिंह गर्ब्यालय, उपाध्यक्ष केडीए

रेलवे महाप्रबंधक ने किया कानपुर सेंट्रल का निरीक्षण

» विकास कार्यों में गति के दिए निर्देश

स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर। उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक उपेंद्र जोशी कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन पहुंचे और चल रहे विकास कार्यों का निरीक्षण किया। उनके आगमन पर डीआरएम समेत रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर मौजूद रहे।

निरीक्षण के दौरान महाप्रबंधक ने यात्री सुविधाओं, साफ-सफाई, निर्माणाधीन परियोजनाओं और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की।

उन्होंने सिटी साइड पर बन रही सात मंजिला बहुउद्देशीय इमारत का भी जायजा लिया और निर्देश दिए कि निर्माण कार्य समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा किया जाए।निरीक्षण के उपरांत महाप्रबंधक भीमसेन, अनवरगंज, लोको शेड और इलेक्ट्रिक सेट यूनिटों के निरीक्षण के लिए

रवाना हुए।

उन्होंने अफसरों से कहा कि स्टेशन पर यात्रियों की सुविधाएं सर्वोच्च प्राथमिकता में रहें और हर परियोजना का समय-समय पर मूल्यांकन किया जाए।

रेलवे सूत्रों के अनुसार, आने वाले महीनों में स्टेशन पर यात्री सुविधाओं के विस्तार के साथ साथ तकनीकी संसाधनों को भी और उन्नत किया जाएगा।

सेठ आनंदराम जयपुरिया स्कूल में भव्य समारोह का आयोजन

सेलिब्रिटी गौरव खन्ना का हुआ गरिमापूर्ण स्वागत

स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर। सेठ आनंदराम जयपुरिया स्कूल, कानपुर में 4 जुलाई को एक भव्य व प्रेरणादायक समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के पूर्व छात्र एवं टेलीविजन के प्रसिद्ध अभिनेता तथा सेलिब्रिटी मास्टर इंडिया के विजेता गौरव खन्ना को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गणेश तिवारी ने उनका हर्षपूर्वक स्वागत किया, जबकि नर्मदा सदन के कप्तान ने उन्हें पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक रीति-रिवाज़ों के साथ हुई। मंच संचालन विद्यार्थियों द्वारा किया गया तथा एक मधुर समूहगान

से कार्यक्रम में रंग भर गया।

गौरव खन्ना ने अपने संबोधन में विद्यालय में बिताए छात्र जीवन की मधुर स्मृतियाँ साझा करते हुए छात्रों को अपने अनुभवों और संघर्षों के जरिए प्रेरित किया। उन्होंने यह भी बताया कि जयपुरिया की शिक्षा और संस्कारों ने उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भूतपूर्व छात्र समन्वयक द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तर सत्र में छात्रों को श्री खन्ना से सीधे संवाद करने का सुनहरा अवसर मिला। यह सत्र अत्यंत प्रेरणादायक रहा और विद्यार्थियों ने इसे बेहद उत्साह के साथ अनुभव किया।

विद्यालय की ओर से गौरव खन्ना को विशेष सम्मान स्वरूप एक कॉफी टेबल बुक व आशीर्वाद स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। इसके पश्चात जयपुरियन ओल्ड स्टूडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री संदीप महेन्द्रा ने जयपुरियन विरासत विषय पर एक ओजस्वी भाषण दिया, जिसमें उन्होंने विद्यालय की गौरवशाली परंपराओं पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। बाद में आयोजित पत्रकार वार्ता में गौरव खन्ना ने अपनी भावनाएँ एवं विचार साझा किए। कार्यक्रम का अंतिम दृश्य तब और भी भावुक हो उठा जब शिक्षकगण एवं श्री खन्ना ने एक साथ सामूहिक चित्र खिंचवाया, जिसे इस अविस्मरणीय दिन की स्मृति के रूप में संजोया गया।

इस अवसर पर विद्यालय के उप प्रधानाचार्य (वरिष्ठ वर्ग) एम. के. मिश्रा, उप प्रधानाचार्या (कनिष्ठ वर्ग) श्रीमती मधुश्री भीमिक, विद्यालय के महाप्रबंधक शैलेंद्र अग्निहोत्री, समस्त शिक्षकगण एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

यह दिन न केवल गौरव खन्ना जैसे महान पूर्व छात्र की उपलब्धियों का उत्सव था,

बल्कि जयपुरिया विद्यालय की उस विशिष्ट परंपरा का भी जीवंत प्रमाण था जो विद्यार्थियों को नेतृत्व, सोच और सपनों की उड़ान के लिए तैयार करती है।

सम्पादकीय

टीएमसी नेताओं की टिप्पणी निंदनीय

कोलकता में कानून की एक छात्रा से सामूहिक दुराचार के मामले में पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ पार्टी तृणमूल कांग्रेस के दो वरिष्ठ नेताओं की अनर्गल टिप्पणी स्त्री की मर्यादा के खिलाफ शर्मनाक व संवेदनहीन प्रतिक्रिया है। एक बार फिर शर्मनाक ढंग से पीड़िता पर दोष मढ़ने की बेशर्म कोशिश की गई है। टीएमसी की महिला नेत्री महुआ मोइत्रा ने पार्टी के नेताओं के बयान पर निराशा व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया है कि इन राजनेताओं के बयान में स्त्री-द्वेष पार्टी लाइन से परे है। वहीं इससे भी बदतर स्थिति यह है कि जिस पार्टी के नेताओं ने ये दुर्भाग्यपूर्ण बयान दिए हैं, उस पार्टी की सुप्रीमो एक महिला ही है। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि ममता बनर्जी जैसी तेजतर्रार मुख्यमंत्री के शासन और नेतृत्व के वर्षों के दौरान टीएमसी के भीतर संवेदनशीलता लाने और मानसिकता में बदलाव लाने के प्रयास विफल होते नजर आ रहे हैं।

विडंबना यह है कि पीड़िता के प्रति निर्लज्ज बयानबाजी अकेले पश्चिम बंगाल का ही मामला नहीं है, देश के अन्य राज्यों में भी ऐसी संवेदनहीन टिप्पणियां सामने आती रही हैं। देश के विभिन्न राज्यों में कई जघन्य अपराधों के बाद टिप्पणियों में पितृसत्तात्मक रीति-रिवाजों को ही उजागर किया जाता है। गाहे-बगाहे शर्मनाक टिप्पणियां की जाती रही हैं। यदि 21वीं सदी के खुले समाज में हम महिलाओं के प्रति संकीर्णता की दृष्टि से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं, तो इसे विडंबना ही कहा जाएगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही कि ये वे लोग हैं जिन्हें जनता अपना नेता मानती है और लाखों लोग उन्हें चुनकर जनप्रतिनिधि संस्थाओं में कानून बनाने व व्यवस्था चलाने भेजते हैं।यहां उल्लेखनीय है कि कोलकता में कानून की छात्रा के साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म के बाद एक विशेष जांच दल का गठन किया गया है और कुछ गिरफ्तारियां भी की गई हैं। निस्संदेह, इसमें दो राय नहीं कि मामले में कानून अपना काम करेगा, लेकिन मामला यहीं खत्म नहीं हो जाना चाहिए। इस मामले में टीएमसी नेताओं की टिप्पणियां निस्संदेह निंदनीय हैं, लेकिन पार्टी के नेताओं व कार्यकर्ताओं द्वारा भी कड़े शब्दों में इसकी निंदा की जानी चाहिए। ममता बनर्जी के सामने एक और चुनौती है। आरजी कर मेडिकल कॉलेज बलात्कार- हत्याकांड और उसके बाद देश भर में उपजा आक्रोश अभी भी यादों में ताजा है। निस्संदेह, केवल टिप्पणियों से पार्टी को अलग कर देना ही पर्याप्त नहीं है। सार्वजनिक जीवन में जीवन-मूल्यों के खिलाफ जाने वाले लोगों के लिये परिणाम तय होने चाहिए। अन्यथा समाज में ये संदेश जाएगा कि ऐसे कुत्सित प्रयासों के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं होती है। यह भी कि यह एक स्वीकार्य व्यवहार है। यह तर्क से परे है कि किसी पीड़िता को पूर्ण भौतिक व मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करना एक आवश्यक कर्तव्य के रूप में निहित क्यों नहीं, चाहे कोई भी पार्टी सत्ता में क्यों न हो। किसी अपराध की रोकथाम अच्छे शासन का एक उपाय है, लेकिन जब कोई अपराध होता है तो प्रभावी प्रतिक्रिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। टीएमसी दोनों ही मामलों में विफल प्रतीत होती है।

कौशल आधारित खेल में कोटा प्रणाली की तार्किकता

प्रदीप मैगज़ीन

दक्षिण अफ़्रीकी प्रयोग के बावजूद, खेलों में आरक्षण एक अतिशयी कदम भी हो सकता है, यदि चुना गया खिलाड़ी प्रतिस्पर्धा करने के लिए पर्याप्त रूप से बढ़िया न हो, और इससे टीम का प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है। पर यह बात भारत को यह आत्मनिरीक्षण करने से रोक नहीं सकती कि क्योंकर उसकी आबादी के एक बड़े हिस्से से कोई खिलाड़ी राष्ट्रीय टीम से गायब है।जब 14 जून, 2025 के दिन इंग्लैंड के लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड पर टेम्बा बावुमा की टीम को टेस्ट क्रिकेट का विश्व चैंपियन का खिताब मिलते देखा, तो यादों में ढाई दशक पहले का एक अति मार्मिक और हिलाकर रख देने वाला पल कौंध गया, जब मैं जोहान्सबर्ग में क्रिकेट साउथ अफ्रीका के तत्कालीन मुख्य कार्यकारी अधिकारी गेराल्ड माजोला का साक्षात्कार कर रहा था। खेल रिपोर्टिंग पेशे के दौरान क्रिकेट की दुनिया में मेरी कई यात्राओं में दक्षिण अफ्रीका ऐसा देश रहा, जहां अतीत के घाव, इससे होते रिसाव की प्रकृति, उन्हें भरने के प्रयास और बदलाव का प्रतिरोध, सभी एक साथ अपना खेल करते दिखाई देते थे। ठीक वैसे ही, जैसा कि भारत में होता है।

जिस क्षण दक्षिण अफीकी क्रिकेट प्रशासन के उस मुख्य कार्यकारी ने रंगभेद और भेदभाव की वजह से अपनी अश्वेत जाति को लगने वाली चोट का वर्णन करना शुरू किया, मैंने देखा कि उनके गालों पर आंसू बह रहे थे। किसी वयस्क को इस तरह रोते हुए देखना दुर्लभ है और आंखें मेरी भी नम हो गईं।बेशक दक्षिण अफीका विविधता संपन्न देश है, लेकिन जिस तरह कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लाभ की एवज पर बहुसंख्यकों का शोषण और भेदभाव करने के लिए नस्लीय रंगभेद का इस्तेमाल किया जाता था, उससे यह माहौल भयावह भी लगता था। यह एक ऐसा देश रहा जहां अश्वेत अफीकियों के साथ वाकई बहिष्कृतों जैसा व्यवहार किया जाता था, जब तक कि 1994 में श्वेत प्रशासन को सत्ता छोड़ने के लिए मजबूर नहीं किया गया,नेल्सन मंडेला इस परिवर्तन के एक उत्प्रेरक और प्रतीक बने। सत्ता हस्तांतरण ने कई बदलावों की शुरुआत की, जिनका उद्देश्य अश्वेत अफीकियों को सशक्त बनाना था और उनमें से एक था घरेलू और राष्ट्रीय क्रिकेट टीमों में अश्वेत प्रतिनिधित्व को अनिवार्य बनाना। इसे 'कोटा सिस्टम' कहा जाता है, इसके तहत, वर्तमान में, राष्ट्रीय टीम में कम-से-कम दो अश्वेत और चार अन्य रंगों के लोगों को शामिल करना जरूरी है, कुछेक मामूली बदलावों के साथ।

जब 2002 में, उस साक्षात्कार में माजोला रो पड़े थे, कोटा सिस्टम खेल में श्वेत-निर्मित ढांचे को हिलाने लगा था और टीम संरचना में फेर-बदल होनी शुरू हो गई थी। दक्षिण अफ्रीका के लिए खेलने वाले अब तक के सर्वश्रेष्ठ तेज़ गेंदबाज़ों में से एक मखाया निटिनि टीम में चुने गए पहले अश्वेत क्रिकेटर थे। बाद में उन्होंने खुलासा किया कि टीम के श्वेत सदस्यों ने उन्हें कभी अपने में से एक नहीं माना, तिरस्कृत किया और अवांछित महसूस कराया। वे अपवाद नहीं थे, क्योंकि कई अन्य खिलाड़ियों को भी इसी तरह के व्यवहार का सामना करना पड़ा। उन्हें योग्यता के आधार पर नहीं बल्कि 'कोटा खिलाड़ी' के रूप में टीम में होने के कारण हल्के में लिया जाता था।लेकिन प्रशासक टस से मस नहीं हुए और आज लगता है कि उस बदलाव ने एक सकारात्मक परिणाम दिया है, जैसा कि बावुमा ने मैच उपरांत अपने भाषण में कहा 'एक विभाजित देश को एकजुट किया'। ऑस्ट्रेलिया पर दक्षिण अफीका की जीत का जश्न मनाने वाले अधिकांश भारतीय क्रिकेट प्रशंसक शायद यह नहीं जानते कि यह अति कुख्यात 'आरक्षण' ही है, जिसने एक ऐसे देश की वास्तविक विविधता को प्रतिबिंबित करने में मदद की है, जिसका इतिहास विभाजनकारी संताप का रहा है। आज जबकि दक्षिण अफ्रीकी टीम में अश्वेत अफीकियों का प्रतिनिधित्व है, यह महसूस करके दु:ख होता है कि भारतीय क्रिकेट इतिहास की शुरुआत से ही, टीम में शामिल किए गए किसी दलित और आदिवासी खिलाड़ी का नाम खोजने में खूब खंगालना पड़ता है।

आंतरिक जगत से अनभिज्ञता ही दुखों का कारण

अंतर्मन

डॉ. मधुसूदन शर्मा

हम जब साक्षी भावों से अपने मनोभावों का विश्लेषण करते हैं तो हम आंतरिक दुनिया से जुड़ते हैं। फिर हमारे तमाम संशय क्षीण होते जाते हैं। कमोबेश अनिर्णय की स्थिति खत्म होती है। हम खुद में एक नई ऊर्जा महसूस करते हैं।भौतिक लिप्साओं के सम्मोहन और दुनियावी चमक-दमक में डूबा मनुष्य जीवनपर्यंत यह नहीं जान पाता कि उसके जीवन का वास्तविक उद्देश्य आखिर क्या है। जन्म लेने से मृत्यु तक मनुष्य को पारिवारिक संस्था से सिखाने की आरंभ हुई प्रक्रिया स्कूल-कालेज होती हुए तकनीकी संस्थानों तक मनुष्य को ज्ञान देती रहती हैं। प्राचीन समय में बाह्य ज्ञान की आपाधापी में मनुष्य को खुद को पहचानने की सीख हमारा धर्म व अध्यात्म देता रहा है। ताकि जिससे मनुष्य अंतर्मुखी होकर अपनी आंतरिक शक्तियों को जान सके। हमारे ऋषि-मुनि सदियों से मनुष्य को खुद को जानने का मार्ग बताते रहे हैं। ताकि जिससे मनुष्य को अपनी आंतरिक शक्तियों का भान हो सके। हमारे आध्यात्मिक व धार्मिक गुरु अपनी आंतरिक यात्राओं के जरिये ही विशिष्ट ज्ञान व शक्तियों को ग्रहण करते रहे हैं। उनके यही गुण उन्हें सामान्य मनुष्य में विशिष्टता प्रदान करते हैं।

विडंबना यह है कि आज हमारा जीवन इतना कृत्रिम हो चला है कि हमने भौतिक सुख-सुविधाओं को ही जीवन का अंतिम हासिल मान लिया है। लेकिन वास्तव में यह मानवीय मूल्यों के क्षरण और आंतरिक शक्तियों के पराभाव का कारक है। हम अपने जीवन की उस गहन यात्रा से वंचित हो जाते हैं जो हमें भीतर की दुनिया की ओर ले जाती है। निस्संदेह, मनुष्य तभी पथभ्रष्ट और अमानवीय कृत्य करता है जब वह अंतर्मन की आवाज को अनसुना कर देता है। यही वजह है कि आज हमारा समाज संवेदनहीन होता जा रहा है। सही मायनों में संवेदनशीलता मनुष्य का अपरिहार्य गुण है। यह उच्च मानवीय अभिव्यक्ति है। ये भाव उसी व्यक्ति में मुखरित होते हैं जिसे अंतर्ज्ञान का बोध हो जाता है। यही भाव मनुष्य में परोपकार की भावना को जाग्रत करता है।दरअसल, कोई भी मनुष्य तब तक संपूर्ण नहीं हो सकता है जब तक कि वह खुद को न जान ले। दरअसल, जिस खुशी को हम भौतिक वस्तुओं व लिप्साओं में तलाशते हैं वह तो नश्वर संसार में हमारे क्षरण का जरिया है। दरअसल, असल खुशी तो आंतरिक होती है। जो हमारी मन:स्थिति पर निर्भर करती हैं। सही मायनों में सांसारिक सुखों में ही हमारे दुख के कारक निहित होते हैं। लेकिन अंतर्मन के ज्ञान को हासिल करने वाला व्यक्ति हर हाल में सुखी रहता है। हमारा जीवन लगातार यांत्रिक होता जा रहा है। सही मायनों में हम आज मशीनी जीवन शैली के पुर्जे मात्र बनकर रह गए हैं। विडंबना यह है कि हमारे जीवन का यह यांत्रिक चक्र जीवन पर्यंत यूं ही चलता रहता है। जब तक हमें वास्तविकता का अहसास होता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। दरअसल, हमारे पूर्वजों ने आश्रम व्यवस्था का सूत्रपात इसीलिए किया था कि एक निश्चित समय के बाद सांसारिक दायित्वों से मुक्त होकर वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के जरिये अंतर्मन की यात्रा की ओर उन्मुख हो सकें। लेकिन पश्चिमी जीवन शैली का अंधानुकरण करके हम आज जीवन में पंच-क्लेषों का ही अंगीकार कर रहे हैं। हमारे जीवन में आलस्य व प्रमाद का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है।मनुष्य को पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के साथ ही खुद से पूछना चाहिए कि मेरे जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या हैञ्‍ मेरा अंतर्मन से संवाद क्यों स्थापित नहीं हो पा रहा हैञ्‍ क्या कभी हमने अपनी आंतरिक शक्तियों को जानने का प्रयास कियाञ्‍ क्या हम आत्मविश्लेषण कर पा रहे हैं कि हमारे जीवन के लक्ष्य क्या हैंञ्‍। दरअसल, हम सजगता व व्यवस्थित जीवन शैली के जरिये ही गहन जीवन दृष्टि हासिल कर सकते हैं।

जालसाज़ पीड़िता बेनकाब: फर्जी मुकदमे में लगी फाइनल रिपोर्ट

» सामाजिक संगठन से मांगी मदद, बाद में उन्हीं पर दर्ज कराया केस

» एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर के चलते करवाया निकाह, फिर पलटी बयानबाज़ी

» पुलिस ने जांच के बाद केस को बताया झूठा, समाजसेविका को मिली राहत

हलचल खबर का असर लगातार

प्रमुख संवाददाता दैनिक स्वराज इंडिया

कानपुर। पीड़िता के नाम पर झूठ का जाल बुनने वाली फराह परवीन नाम की महिला का फरेबी चेहरा उजागर हो चुका है। फराह, जो पहले से शादीशुदा और मां थी, ने सऊदी अरब में कार्यरत मोहम्मद एहसान से सोशल मीडिया के जरिए संबंध बनाए। पति को छोड़कर एहसान से निकाह की इच्छा जताई और इसके लिए ऐपीसीआर (एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स) की कानपुर इकाई की जॉइंट सेक्रेटरी आभा शुक्ला से मदद मांगी। आभा शुक्ला ने समाजिक भावना से काम लेते हुए प्रशासनिक उपस्थिति में इस निकाह को मुस्लिम धार्मिक रीति से करवाया। लेकिन कुछ समय बाद, फराह ने अचानक पलटी मारी और बाबूपुरवा कोतवाली में आभा शुक्ला, मोहम्मद एहसान व अन्य लोगों पर फर्जी निकाह और शोषण जैसे गंभीर आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज करा दिया।

फर्जी मुकदमे की पटकथा जांच में झूठ उजागर, पुलिस ने बंद की फाइल

मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने विस्तृत जांच की। जांच में सामने आया कि महिला ने घटना को तोड़–मरोड़कर पेश किया और उसके दावों के कोई ठोस साक्ष्य नहीं मिले। इसके बाद पुलिस ने फाइनल रिपोर्ट लगाकर मुकदमे को झूठा घोषित करते हुए बंद कर दिया।

सूत्रों के अनुसार, फराह पूर्व में भी कई विवादित घटनाओं में शामिल रही है और कुछ अन्य मामलों में भी उसने लोगों को फर्जी मुकदमों में फंसाकर धन वसूली की थी ।यह पहली बार है कि इस तरह की जालसाज़ पीड़िता को कानूनी मोर्चे पर हार का सामना करना पड़ा है। समाजसेविका आभा शुक्ला को न्याय मिला है, लेकिन यह मामला ऐसे पूरे नेटवर्क पर सवाल खड़ा करता है, जो पीड़िता की आड़ में ब्लैकमेलिंग का खेल खेलते हैं।

सोसल वर्कर आभा शुक्ला साबित हुई निर्दोष

जालसाज़ पीड़िता परोसने वाले गैंग पर कब गिरेगी कानूनी गाज ?

कानपुर में पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार लगातार वसूलीबाज़ पत्रकारों और अपराधिक प्रवृति के वकीलों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई कर रहे हैं। यह सराहनीय है, लेकिन अब वक्त आ गया है कि वे उन सुनियोजित रैकेट्स पर भी शिकंजा कसें, उत्पीड़न की आड़ में जालसाज़ पीड़िता तैयार करके समाजसेवकों, अधिकारियों और आम नागरिकों को फंसाने का गोरखधंधा चला रहे हैं।

ऐसे नेटवर्क अब महिलाओं की सहायता के नाम पर संस्थाएं बनाकर, मदद के नाम पर ब्लैकमेलिंग और समझौता वसूली का धंधा चला रहे हैं। झूठे मुकदमे लिखवा कर समाज का भरोसा ही नहीं, कानून की गरिमा को भी छलनी कर रहे हैं।

फराह परवीन का मामला इसी नेटवर्क की एक परत है। अब कानपुर पुलिस को चाहिए कि वह इस पूरे गिरोह का जड़ से खुलासा कर, उन चेहरों को बेनकाब करें जो पीड़िता शब्द को एक धंधा बना चुके हैं।

पहले मांगी मदद फिर उन्हीं पर ठोक दिया मुकदमा

जालसाज पीड़िताएं चला रहीं धन उगाही का रैकेट

संगीन धाराओं में मुकदमे दर्ज कराए बाद में कर लिया समझौता, एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर में पति को छोड़ प्रेमी पर लिखाया मुकदमा

» विशेष संवाददाता, स्वराज इंडिया।

कानपुर। बीते दिनों एक खबर जोर-शोर से अखबारों में चिंगारी की तरह सुलग रही थी कि बाबा जी के बुल्डोजर पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक, बस इसी खबर से उत्तर प्रदेश के अंदर चर्चा में आया एक सामाजिक संगठन जिसका नाम है एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स (एपीसीआर)। यही वह एकमात्र सामाजिक संगठन है, जिसने उत्तर प्रदेश सरकार की बुलडोजर नीति को एक झटका देने का काम किया है। परंतु मौजूदा वक्त में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में एक ऐसा आपराधिक प्रकरण निकल कर सामने आया है जिससे इस सामाजिक संगठन के कुछ पदाधिकारियों की रातों की नींद उड़ी हुई है। पीड़ित और लाचारों की मदद करने के लिए जाना जाने वाले इस सामाजिक संगठन की जॉइंट सेक्रेटरी के पद पर कार्यरत एक महिला पदाधिकारी को कटघरे में खड़ा कर दिया गया है और उसका कारण है कानपुर की एक जालसाज महिला जिसने पहले इस संगठन के कुछ पदाधिकारियों से अपनी दुःखद कहानी के नाम पर मदद मांगी और बाद में उन पर ही एक मुकदमा पंजीकृत करा दिया।

APCR Association For Protection of Civil Rights VS पीड़िता

विस्तृत खबर इस प्रकार है कि कानपुर की बाबू पुरवा कोतवाली के अंतर्गत मुंशीपुरवा इलाके की रहने वाली महिला फराह परवीन के द्वारा सर्वप्रथम सऊदी अरब में नौकरी करने वाले मोहम्मद एहसान नामक युवक से सोशल मीडिया के माध्यम का इस्तेमाल करके तीन बच्चियों की मां होने के बावजूद भी एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर किया गया और रिज़्वी रोड निवासी अपने पति मोहम्मद अहमद को सर्व सहमति से छोड़ दिया गया ताकि एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर वाले युवक एहसान से निकाह किया जा सके।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार महिला अपने एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर के चलते गर्भवती हो गई थी जब इस बात की जानकारी पति मोहम्मद अहमद को हुई तो पारिवारिक विवाद होने के बाद सहमति से महिला के द्वारा स्वयं को पति से अलग कर लिया गया। यहां पर महिला के द्वारा एपीसीआर संगठन की उत्तर प्रदेश विंग की कानपुर जॉइंट सेक्रेटरी आभा शुक्ला से इस बात की मदद मांगी गई कि वह एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर में गर्भवती हुई महिला फराह परवीन का निकाह सऊदी अरब में नौकरी करने वाले युवक मोहम्मद एहसान से करा दें। पीड़ितों और लाचारों की मदद के लिए चर्चित संगठन की पदाधिकारी होने की वजह से आभा शुक्ला के द्वारा इस पूरे प्रकरण को प्रशासन की मौजूदगी में रखते हुए मुस्लिम धर्म के नियमों के अनुसार गर्भवती महिला फराह परवीन का मोहम्मद एहसान के साथ निकाह करा दिया गया। निकाह के उपरांत किसी बात को लेकर महिला फराह परवीन और उसके नव जीवन साथी मोहम्मद एहसान के बीच कुछ नोक झोंक हुई तो महिला के पति मोहम्मद एहसान के द्वारा भी समाज सेविका आभा शुक्ला से मदद मांगी गई। जब उनके द्वारा दोनों पति-पत्नी को समझा बुझाकर पुनः साथ रहने की बात कही गई तो शातिर किस्म की महिला के द्वारा बाबू पुरवा कोतवाली में अपने पति मोहम्मद एहसान तथा आभा शुक्ला और महिला की मदद करने में शामिल हुए कुछ अन्य लोगों के खिलाफ फर्जी तरीके से निकाह करा कर महिला का शारीरिक शोषण कराने जैसा प्रार्थना पत्र देकर एक मुकदमा पंजीकृत करा दिया गया इसके बाद से महिला का पति मोहम्मद एहसान फरार है।

जालसाज़ महिला पहले भी लोगों को बना चुकी है फर्जी मुकदमों का शिकार

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार महिला शहर की कुछ अन्य जालसाज़ महिलाओं के संपर्क में रहती है और प्रशासन से मिली जानकारी के अनुसार महिला ने पूर्व में भी तमाम लोगों पर इस तरह के फर्जी मुकदमें लिखवाए हैं जिसमें जांच करने के बाद पुलिस के द्वारा फाइनल रिपोर्ट लगा दी गई है। महिला के द्वारा गैंगरेप जैसे एक गंभीर अपराध का मुकदमा भी कोर्ट के माध्यम से कुछ लोगों पर पंजीकृत कराया गया था जिसकी जांच करने के बाद पुलिस के द्वारा फाइनल रिपोर्ट लगाकर मुकदमे को खत्म कर दिया गया था।

इसके साथ-साथ महिला के द्वारा कुछ अन्य मुकदमों में भी लोगों को फंसाने का प्रयास किया गया पर उसमें भी पुलिस के द्वारा फाइनल रिपोर्ट लगाकर फाइल को बंद कर दिया गया। इससे साफ साबित हो रहा है की महिला शातिर किस्म की है जिसकी मंशा सिर्फ किसी न किसी बात को लेकर लोगों को फर्जी मुकदमों में फंसाकर उनसे धन उगाही करना रहता है जिसका लाभ कुछ अन्य जालसाज़ महिलाओं तक भी पहुंचता है जिनका खुलासा भी बहुत जल्द स्वराज इंडिया के माध्यम से कर दिया जाएगा।

खुद कबूला गैंग रेप का फर्जी मुकदमा लिखाना

जिले के अंदर इस गंभीर मामले की सुर्खियां जब स्वराज इंडिया तक पहुंची तो उनकी टीम के द्वारा [illegible] की जॉइंट सेक्रेटरी आभा शुक्ला पर बाबू पुरवा कोतवाली में मुकदमा लिखवाने वाली महिला फराह परवीन से फोन के माध्यम से संपर्क साधा गया। मुकदमा लिखवाने वाली महिला के अनुसार उसने आभा शुक्ला पर बेहद संगीन आरोप लगाए हैं। महिला के अनुसार उसने स्वयं के साथ अफेयर के चलते हुई अजमेर शरीफ की ट्रिप के दौरान उसके प्रेमी मोहम्मद एहसान के द्वारा सर्वप्रथम उसकी कोल्ड ड्रिंक में व्हिस्की मिलाकर नशे की हालत में उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए गए। बाद में जब प्रेमी ने इस हरकत के लिए महिला से माफी मांगी तो उसने माफ कर दिया। उसके बाद महिला का आरोप है कि मोहम्मद एहसान आए दिन उसे सारेराह परेशान करने लगा उसके बाद वह महिला पर दबाव डालकर उसे पुनः कानपुर के किसी होटल में लेकर गया जहां उसने फिर से महिला के साथ हैवानियत को अंजाम दे डाला।

कुछ दिनों बाद महिला को यह ज्ञात हुआ कि वह गर्भवती है और उसने एपीसीआर की जॉइंट सेक्रेटरी आभा शुक्ला से यह मदद मांगी कि मेरे एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर के चलते मुझे मेरे पति के द्वारा भी छोड़ दिया गया है और जिस मोहम्मद एहसान के साथ मेरा अफेयर था उसने मुझे प्रेग्नेंट कर दिया है। एहसान अब निकाह करने से मना कर रहा है। मोहम्मद एहसान मुझसे पहले भी सात महिलाओं के साथ ऐसा कर चुका है। इस घटना को सुनने के बाद जॉइन सेक्रेटरी आभा शुक्ला के द्वारा सर्वप्रथम इस पूरे प्रकरण को कानपुर कमिश्नर के सामने पेश किया गया और युवक की गिरफ्तारी करवाई गई इसके बाद युवक निकाह करने के लिए तैयार हो गया और दोनों का सर्व सहमति से निकाह करा दिया गया।

निकाह के बाद दोनों पति-पत्नी के बीच किसी बात को लेकर नोक-झोंक हुई जिसके बाद महिला फराह परवीन के द्वारा बाबू पुरवा कोतवाली में अपने पति मोहम्मद एहसान के साथ-साथ समाज सेविका आभा शुक्ला और उसकी मदद करने को लेकर शामिल हुए कुछ अन्य लोगों पर महिला का फर्जी निकाह करवाकर शारीरिक शोषण करवाने जैसा एक मुकदमा पंजीकृत करा दिया गया।

स्वराज इंडिया की टीम से बातचीत के दौरान महिला ने आभा शुक्ला पर यह भी आरोप लगाया कि उनके द्वारा मोहम्मद एहसान की बहन से 3 लाख रुपए लेकर उसके के साथ इस तरह की धोखाधड़ी को अंजाम दिलवाया गया है। इतनी लंबी बातचीत के दौरान जब महिला से उसके द्वारा कई वर्षों पहले कोर्ट के माध्यम से लिखवाए गए गैंगरेप के फर्जी मुकदमे से जुड़ा सवाल किया गया तो महिला ने स्वयं कुबूल कर लिया कि उसके मकान मालिक की किसी तुच्छ हरकत की वजह से उसके पहले पति महोम्मद अहमद का विवाद मकान मालिक से हुआ था। जिसमें दोनों पक्षों में गंभीर मारपीट हुई थी और मकान मालिक के द्वारा महिला के पति पर एक फर्जी मुकदमा लिखाया जा रहा था। जिसके विरोध में महिला के द्वारा भी दूसरे पक्ष गैंगरेप जैसा गंभीर मुकदमा कोर्ट के माध्यम से लिखवाया गया। जबकि महिला ने यह बात स्वयं बताई है कि उसके साथ कोई गैंगरेप नहीं हुआ था बल्कि सिर्फ मारपीट हुई थी और महिला यहां तक बोल गई कि वह इस मुकदमे को लड़ना नहीं चाहती थी। इसलिए उसने जांच अधिकारी से बात करके गैंगरेप के मुकदमे में फाइनल रिपोर्ट लगवा दी थी। जबकि सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार मकान मालिक से विवाद मकान न खाली करने की वजह से हुआ था।

फिर विवादों में जी.एस. लॉ कॉलेज

फर्जीवाड़ा, जालसाजी और बीसीआई मानकों की अनदेखी पर प्रबंधक का अलर्ट

स्वराज इंडिया संवाददाता

अयोध्या। जी.एस. कॉलेज ऑफ लॉ एक बार फिर विवादों की आंच में झुलसता नजर आ रहा है। कॉलेज के प्रबंधक ए.के. तिवारी ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर छात्रों, अभिभावकों और संबंधित पक्षों को सीधी चेतावनी दी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वर्तमान में कॉलेज के प्रबंधन को लेकर विभिन्न न्यायालयों में मुकदमे विचाराधीन हैं। ट्रस्ट और प्रबंधतंत्र से जुड़े कागजातों में भारी हेराफेरी, जालसाजी और धोखाधड़ी के आरोप हैं जिन पर आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं और पुलिस जांच जारी है।

प्रबंधक तिवारी के अनुसार, कॉलेज के मौजूदा प्रशासन द्वारा बार काउंसिल ऑफ इंडिया के मापदंडों की सरेआम अनदेखी की जा रही है। इससे न केवल संस्था की वैधता सवालों के घेरे में आ गई है, बल्कि छात्रों का शैक्षणिक भविष्य भी गंभीर खतरे में है।उन्होंने यह भी दावा किया कि कॉलेज में कार्यरत कई शिक्षकों और यहां तक कि प्राचार्य की नियुक्ति में योग्यता के मानक ताक पर रखे गए हैं। छात्रों को जानबूझकर भ्रमित किया जा रहा है, जिससे वे धोखे में रहकर अपना समय, पैसा और भविष्य गवां रहे हैं।

प्रबंधक की सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि उन्होंने सार्वजनिक रूप से यह एलान कर दिया कि यदि भविष्य में किसी छात्र को शैक्षणिक, विधिक या करियर से जुड़ी किसी भी प्रकार की हानि होती है, तो कॉलेज इसकी कोई जिम्मेदारी नहीं लेगा। छात्र स्वयं इसके लिए जिम्मेदार होंगे। कॉलेज के कुछ छात्रों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि पिछले कुछ महीनों से प्रशासनिक गतिविधियों में भारी अस्थिरता देखी जा रही है। कई बार कक्षाएं स्थगित हो जाती हैं, और प्रमाणपत्रों को लेकर भी असमंजस बना रहता है। कॉलेज से जुड़े लगातार विवादों ने शिक्षा व्यवस्था की पारदर्शिता और छात्रों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। ऐसे में उच्च न्यायालय या बीसीआई द्वारा किसी स्वतंत्र एजेंसी से जांच कराना अब आवश्यक हो गया है, ताकि कानून की पढ़ाई पढ़ रहे छात्र खुद ही किसी फर्जीवाड़े का शिकार न बन जाएं।

कानून का ज्ञान देने वाला संस्थान ही कानूनी पचड़ों में घिरा वहां शिक्षा का भविष्य कैसा होगा? जी.एस. लॉ कॉलेज का यह ताजा विवाद शिक्षा की साख पर फिर एक करारा तमाचा है। अब देखना यह है कि प्रशासन इस पर क्या रुख अपनाता है और छात्र अपने हक की लड़ाई कैसे लड़ते हैं।

कानपुर में महिला और बेटियों पर जानलेवा हमला, शिकायत के बावजूद पुलिस चुप!

स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर। कानपुर के चकेरी थाना क्षेत्र में संगीता सिंह और उनके परिवार पर मोहल्ले के दर्जनभर नशा तस्करों ने घर में घुसकर जानलेवा हमला कर दिया, लेकिन हैरानी की बात यह है कि पुलिस अभी तक मूकदर्शक बनी हुई है।

घटना 1 जुलाई शाम करीब 7 बजे की है, जब काजीखेड़ा, लाल बंगला निवासी संगीता सिंह के घर में सुमन, माही, तन्नू, पाखी, सागर, आर्यन, रिषभ, सनी, मोहित, अंशू और राजकुमार जैसे नशा कारोबारियों ने लाठी, डंडे, ईंट, रॉड और धारदार हथियारों से हमला बोल दिया।

हमलावरों ने न सिर्फ संगीता सिंह को पीटा, बल्कि उनकी बेटियों नैना, करीना और स्नेहा को भी बुरी तरह घायल किया।

नैना की गर्दन पर धारदार हथियार से वार किया गया, जिससे उसका चेहरा फट गया और 6 टांके आए।करीना को बाल पकड़कर दीवार पर पटका गया, और लज्जा भंग की कोशिश की गई। स्नेहा को लोहे की रॉड से पीटकर बेहोश कर दिया गया, जबकि संगीता और उनके बेटे वंश को भी बेरहमी से पीटा गया।

नशा तस्करों का आतंक, पुलिस की चुप्पी खतरनाक संकेत

संगीता सिंह का आरोप है कि हमलावर इलाके में गांजा और स्मैक की तस्करी करते हैं, और पहले भी विरोध करने पर परिवार को जान से मारने की धमकी दी गई थी। घटना के बाद 112 पर कॉल और थाने में शिकायत देने के बावजूद अब तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई।

कमिश्नर से लगाई गुहार, हमारा परिवार डर के साए में है

पीड़िता संगीता सिंह ने कानपुर पुलिस कमिश्नर से गुहार लगाई है कि सभी हमलावरों पर सख्त धाराओं में केस दर्ज कर तुरंत गिरफ्तारी की जाए। उनका कहना है कि पुलिस की निष्क्रियता के चलते पूरा परिवार दहशत में जी रहा है।अगर अब भी प्रशासन नहीं जागा, तो अगली बार खबर किसी की मौत की हो सकती है।

सवाल यह है कि

खुलेआम नशा बेचने वाले दबंगों पर पुलिस क्यों मेहरबान है?

महिलाओं पर जानलेवा हमला और लज्जा भंग की कोशिश जैसे गंभीर अपराधों पर कार्रवाई क्यों नहीं?

क्या कानपुर में अब कानून सिर्फ रसूख वालों के लिए रह गया है?

डेढ़ साल की मासूम की हत्या करने वाला आरोपी गिरफ्तार

» मां और मौसी से मारपीट के बाद बच्ची को डंडे से मारा

» गजनेर पुलिस ने दबोचा आरोपी, गंभीर धाराओं में भेजा गया जेल

अपराधी को जेल भेजती हुई गजनेर पुलिस

स्वराज इंडिया www.swarajindianews.com कानपुर देहात कानपुर, शुक्रवार 04 जुलाई, 2025 08

पत्नी-बेटी पर हैवान बना पति, डेढ़ साल की बच्ची की पीट-पीटकर हत्या

» सीधामऊ गांव में शराब के नशे में पत्नी से मारपीट के दौरान साढ़ू की मासूम बच्ची की गई जान

» घटना में पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल, आरोपी गिरफ्तार, हत्या में प्रयुक्त ऑटो जब्त

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो
कानपुर देहात। गजनेर थाना क्षेत्र के सीधा मऊ गांव में घरेलू विवाद ने खौफनाक रूप ले लिया जब एक पति ने शराब के नशे में पत्नी और बेटी पर हमला कर दिया। इस मारपीट में साढ़ू की डेढ़ साल की मासूम बच्ची की मौत हो गई, जबकि पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गए।

पुलिस के अनुसार, यशोदा नगर, थाना नौबस्ता, कानपुर नगर निवासी अवध शुक्ला की शादी 9 साल पहले रेशमा पुत्री कर्मा पासवान से हुई थी।

दंपति का 6 साल का बेटा पुष्पेन्द्र और 3 साल की बेटी पुष्पा है। घरेलू कलह के चलते रेशमा करीब दो महीने पहले अपने साढ़ू अनिल पासवान (निवासी सीधेमऊ) के घर आकर रहने लगी थी।सोमवार रात अवध शुक्ला अपनी पत्नी को लेने साढ़ू के घर पहुंचा और वहां दोनों के बीच जमकर विवाद हुआ। आरोप है कि नशे में धुत अवध ने न सिर्फ अपनी पत्नी और बेटी को पीटा, बल्कि साढ़ू की डेढ़ साल की बेटी आरोही को भी नहीं बख्शा, जिसकी मौके पर ही मौत हो गई।घटना की सूचना मिलते ही गजनेर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, अकबरपुर भेजा, जहां से दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। दोनों के सिर में गंभीर चोटें हैं।

सीओ संजय वर्मा ने बताया कि मृत बच्ची के परिजनों की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। आरोपी अवध शुक्ला को हिरासत में लेकर उसकी ऑटो भी जब्त कर ली गई है। घायलों का इलाज जारी है, मामले की जांच कर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

कानपुर देहात। जनपद में अपराधों पर नकेल कसने के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत थाना गजनेर पुलिस ने एक सनसनीखेज मामले का खुलासा करते हुए मासूम बच्ची की हत्या के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। यह घटना तब सामने आई जब पीड़ित परिवार के मुखिया ने थाने में तहरीर देकर बताया कि आरोपी ने उसकी पत्नी और साली से गाली-गलौज कर मारपीट की और उनकी 18 माह की बच्ची को डंडे से हमला कर मार डाला।

घटना को अंजाम देने वाला आरोपी अवध बिहारी शुक्ला, कानपुर नगर का निवासी है। पीड़ित परिवार के अनुसार, आरोपी ने जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए महिलाओं को अपमानित किया और बीच-बचाव कर रही मासूम बच्ची को बेरहमी से डंडे से मार दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। यह पूरी घटना न केवल मानवता को झकझोरने वाली है, बल्कि समाज में व्याप्त जातीय मानसिकता का भी एक भयावह उदाहरण है।

इस जघन्य कृत्य के बाद थाना गजनेर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ गंभीर धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करते हुए त्वरित कार्रवाई की और अगले ही दिन उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी को नियमानुसार न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। पुलिस अधीक्षक अरविन्द मिश्रा ने टीम की तत्परता की सराहना की है और कहा है कि ऐसे अपराधियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

180 किसानों को मुफ्त मिला देशी बीज का तोहफा

» पॉस मशीन के जरिए वितरित की गई बाजरा, ज्वार और रागी की किट

» डीघ के राजकीय बीज भंडार में किसानों की उमड़ी भीड़

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। विकास खंड मलासा के डीघ स्थित राजकीय बीज भंडार में शुक्रवार को 180 किसानों को नि-शुल्क बीज किट का वितरण किया गया।

किसान सुबह से ही बीज पाने के लिए बीज भंडार कार्यालय पहुंचने लगे थे। बीज भंडार प्रभारी सौरभ रावत ने बताया कि किसानों को देशी प्रजाति का बाजरा (2 किलो), ज्वार (3 किलो) और रागी (4 किलो) की बीज किट पॉस मशीन में अंगूठा सत्यापन के बाद उपलब्ध कराई गई।किसानों को संकुल ज्वार, शावा, कोदो और देशी बाजरा जैसी मोटे अनाजों की प्रजातियां दी गईं। इस मौके पर तकनीकी प्रबंधक रामलखन, सुमित कुमार, यश कुमार और जैनेंद्र सिंह भी मौजूद रहे। बीज वितरण के दौरान किसानों में प्रसन्नता देखी गई और उन्होंने सरकार की इस योजना की सराहना की।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सपना देवी द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स 127/875, साकेत नगर, कानपुर नगर- (उप्र) से मुद्रित व 119/13, दर्शनपुरवा, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से प्रकाशित। संपादकः अनूप कुमार RNI No.: UPHIN/2023/86769 | Email: swarajindia2023@gmail.com | Mob: 7800009853, | Website: www.swarajindianews.com | (समस्त वाद-विवाद कानपुर न्यायालय के अधीन होंगे)

नेपाल में गूंजी बाराबंकी की बेटी की गूंज

ताइक्कांडो में जीता गोल्ड और सिल्वर

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

बाराबंकी। नेपाल के पोखरा में आयोजित 8वीं एशिया कप ओपन इंटरनेशनल ताइक्कांडो चैंपियनशिप-2025 में भारत को बड़ी कामयाबी मिली है। बाराबंकी के एडीजे कृष्ण चंद्र सिंह की बेटी कृष्णप्रिया ने इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में एक स्वर्ण और एक रजत पदक जीतकर न सिर्फ देश का, बल्कि पूरे जिले का नाम रोशन किया है।

27 से 29 जून तक चली इस प्रतियोगिता में 7 देशों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कृष्णप्रिया की इस शानदार उपलब्धि पर उनके घर पहुंचने पर परिवारजनों ने मिठाई खिलाकर उनका भव्य स्वागत किया।

आईपीएस बनने का सपना, किरण बेदी हैं प्रेरणा

कृष्णप्रिया ने बताया कि वे पूर्व आईपीएस अधिकारी डॉ. किरण बेदी को अपना आदर्श मानती हैं और भविष्य में आईपीएस अधिकारी बनकर देश सेवा करना चाहती हैं। उनका मानना है कि ताइक्कांडो न सिर्फ आत्मरक्षा, बल्कि दूसरों की सुरक्षा के लिए भी जरूरी है।उन्होंने यह भी कहा कि आज के दौर में हर महिला को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लेना चाहिए। इस सफलता का श्रेय उन्होंने अपने पिता को दिया, जिन्हें वे अपनी प्रेरणा का स्रोत मानती हैं।कृष्णप्रिया की इस ऐतिहासिक उपलब्धि ने न केवल बाराबंकी बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश को गौरवान्वित किया है।

सरकारी स्कूल में निकला अजगर

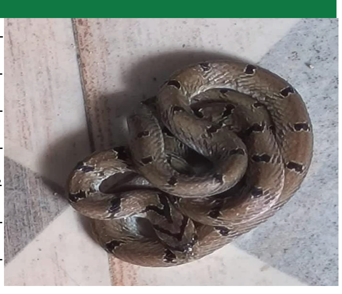

निन्दूरा बाराबंकी। विकास खंड निंदूरा अंतर्गत घुघटेर कोतवाली के बगल में बने कंपोजिट विद्यालय में सांप निकलने से मचा हड़कंप ग्रामीणों की मदद से सांप को बाहर निकाला गया। उसके बाद कक्षा चालू हो सकी विकास खण्ड निन्दूरा क्षेत्र में शुक्रवार को कंपोजिट विद्यालय घुघटेर में कक्षा में सांप निकलने में विद्यालय में अफरा तफरी मच गई। मौजूद शिक्षकों ने ग्रामीणों की मदद से सांप को खदेड़ा गया शिक्षक ने बताया कि बच्चे जब क्लास में पहुंचे तो सांप बेंच के नीचे बैठा था। जिससे स्कूल में अफरा तफरी मच गई ग्रामीणों की मदद से सांप को खदेड़ा गया।

बीमारी से तंग आकर युवक ने की आत्महत्या, गांव में मातम

स्वराज इंडिया संवाददाता

निंदूरा (बाराबंकी)। बड्डूपुर कोतवाली क्षेत्र के सुलोनीपुर (मजरा खिझना) गांव में एक 18 वर्षीय युवक ने बीमारी से तंग आकर आत्महत्या कर ली, जिससे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। युवक शनि कुमार मौर्य पुत्र सियाराम मौर्य पिछले कई वर्षों से गंभीर न्यूरोलॉजिकल बीमारी से पीड़ित था और मेडिकल कॉलेज, लखनऊ में उसका इलाज चल रहा था।परिजनों के अनुसार, बीमारी से लगातार मानसिक और शारीरिक रूप से टूट चुके शनि ने गांव के बाहर स्थित आम के बाग में एक पेड़ से गमछे के सहारे फांसी लगाकर अपनी जान दे दी।घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली प्रभारी मनोज कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया।प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि युवक गंभीर बीमारी से जूझ रहा था और इसी मानसिक तनाव के चलते आत्महत्या की आशंका जताई जा रही है। आगे की कार्रवाई की जा रही है।युवक की असमय मौत से परिवार में कोहराम मच गया है और गांव में शोक व्याप्त है।

5 जुलाई 2005 की वो डरावनी सुबह ...

» वो सुबह जब कैमरे कांप रहे थे और कलम डर से नहीं, जिम्मेदारी से चल रही थी

समीर शाही/स्वराज इंडिया

अयोध्या। 5 जुलाई 2005 की सुबह अयोध्या में कुछ ज्यादा ही शांत थी। मैं जैन टीवी चैनल में स्थानीय संवाददाता के तौर पर तैनात था और रोज़ की तरह निकला था सोचा था मंदिर की परिक्रमा, दर्शनार्थियों का हाल और रामलला के टेंट की एक सामान्य फोटोकॉपी रिपोर्ट बनाऊंगा। लेकिन तक़दीर ने उस दिन रिपोर्ट नहीं, इतिहास लिखवाना तय कर लिया था। करीब 8.15 पर मैं रामकोट इलाके के पास था, तभी एक ज़ोरदार धमाका हुआ। शुरुआत में लगा कोई सिलेंडर फटा होगा। लेकिन सेकेंड भर में जो हुआ, उसने पूरी रामनगरी को थर्रा दिया। लगातार गोलियों की आवाज़ें, चीखें, भगदड और मेरे कांपते हाथ में एक छोटा सा हैंडिकैम था।मेरी आंखों के सामने भगदड़ मची हुई थी। महिलाएं बच्चों को लेकर भाग रही थीं, साधु-संत अपनी झोपड़ियों से निकलकर चिल्ला रहे थे रामलला को कुछ मत होने देना!

मैंने देखा, मुख्य प्रवेश द्वार की ओर काले कपड़ों में हथियारबंद आतंकी तेजी से बढ़ रहे थे। वहीं एक जवान ने अकेले ही एक आतंकी को ढेर कर दिया – मेरी आंखें फटी रह गईं, कैमरा झुका दिया, क्योंकि उस पल रिपोर्टिंग नहीं, इंसानियत चीख रही थी। मैं खुद वहां से हटकर पास की दीवार की आड़ में गया, लेकिन हाथ अपने आप कैमरे के बटन दबा रहे थे। साउंड रिकॉर्डर में सिर्फ़ गोली और 'जय श्रीराम' की आवाज़ें थीं।

थोड़ी देर बाद जब सीआरपीएफ के जवानों ने मोर्चा संभाला, मैंने पहली बार डर और हिम्मत को एक साथ लड़ते देखा। एक इंस्पेक्टर ने मुझे झिड़कते हुए कहा, यहां से हटो,

अयोध्या संस्मरण

लेकिन रिकॉर्ड करते रहो — लोग जानें कि हम क्या झेल रहे हैं। हमले के दो घंटे बाद जब चारों तरफ़ धुआं छंटा, तो देखा छह आतंकवादी मारे जा चुके थे। दो स्थानीय लोग अपनी जान गंवा चुके थे। रामलला का टेंट सुरक्षित था ये सुनते ही मेरे आंसू निकल पड़े।

20 साल पहले के उस मंजर को याद कर कांप जाते हैं पत्रकार और स्थानीय नागरिक

मैंने वो रिपोर्ट अपने चैनल को भेजी, लेकिन दिल से सिर्फ़ यही निकला आज मैंने कैमरे से नहीं, आत्मा से रिपोर्टिंग की है। 20 साल हो गए उस दिन को, लेकिन हर 5 जुलाई की सुबह अब भी मेरे भीतर गूंजती है। पत्रकारिता के उस काले दिन में मैंने जाना कि कैमरा कभी-कभी बंदूक से भी ज्यादा बड़ा हथियार होता है जब वो सच को बेखौफ दिखाता है।

अयोध्या में तहसील लेखपाल वसूली करते फिर कैमरे में कैद

सिस्टम पर फिर उठे सवाल

स्वराज इंडिया संवाददाता

अयोध्या। जनपद के तहसील कार्यालयों में भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी हैं कि अब कैमरे और कार्रवाई तक का डर लेखपालों के चेहरे से गायब होता जा रहा है। ताज़ा मामला ज़िले की बहुचर्चित तहसील सोहावल का है, जहां लेखपाल राम धीरज का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। वीडियो में वह एक ज़मीन की रिपोर्ट लगाने के बदले ?500 की रिश्वत लेते हुए साफ नजर आ रहे हैं।

इससे पहले बीकापुर तहसील में भी ऐसा ही मामला सामने आया था। वहां मृत्यु प्रमाण पत्र की रिपोर्ट पर ?10,000 घूस लेते एक लेखपाल कैमरे में कैद हुआ था। वीडियो के वायरल होते ही प्रशासन हरकत में आया और एसडीएम बीकापुर ने तत्काल निलंबन की कार्रवाई की थी।मगर सोहावल मामले में अब तक तहसील प्रशासन की चुप्पी खुद एक सवाल बन गई है। न कोई जांच कमेटी बनी, न ही कोई आधिकारिक बयान सामने आया है। अब बड़ा सवाल यह है कि

जब बार-बार विजिलेंस और मीडिया की निगरानी में भी तहसीलों में भ्रष्टाचार रुका नहीं, तो कौन दे रहा है इन भ्रष्ट अफसरों को संरक्षण? क्या जिले में रिश्वतखोरी अब एक प्रशासनिक परंपरा बनती जा रही है?और सबसे अहम क्या आम आदमी को अपने ही हक की रिपोर्ट के लिए रिश्वत देना अब अनिवार्य हो चुका है?

बीबीडी ग्रुप की बेनामी संपत्तियों पर आयकर विभाग का शिकंजा

100 करोड़ की प्रॉपर्टी ज़ब्त, कई कर्मचारियों के नाम पर खरीदी गई थी संपत्ति

प्रमुख संवाददाता स्वराज इंडिया

लखनऊ।राजधानी लखनऊ में अपनी अकूत संपत्तियों के लिए चर्चित बीबीडी ग्रुप एक बार फिर सुर्खियों में है, लेकिन इस बार वजह गर्व की नहीं, बल्कि गंभीर आर्थिक अनियमितताओं की है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, आयकर विभाग ने बीबीडी ग्रुप की लगभग 100 करोड़ रुपए की बेनामी संपत्तियों को ज़ब्त कर लिया है। ये संपत्तियां कथित तौर पर ग्रुप के ग़रीब कर्मचारियों, जिनमें कई दलित वर्ग से हैं, के नाम पर खरीदी गई थीं।

जांच से जुड़े अधिकारियों के अनुसार, बीबीडी ग्रुप ने पिछले कई वर्षों में लखनऊ और आस-पास के क्षेत्रों में करोड़ों की अचल संपत्तियां अपने कर्मचारियों के नाम पर खरीदी थीं। हैरान करने वाली बात यह है कि इनमें से अधिकतर कर्मचारियों को इस बात की जानकारी तक नहीं थी कि उनके नाम पर 50 लाख से लेकर 5 करोड़ तक की प्रॉपर्टी मौजूद है।

आयकर विभाग की गोपनीय जांच

सूत्र बताते हैं कि आयकर विभाग पिछले कई महीनों से इस मामले की निगरानी कर रहा था। जैसे ही बीबीडी ग्रुप को इस जांच की भनक लगी, उन्होंने संपत्तियां बेचना शुरू कर दिया। लेकिन विभाग ने त्वरित कार्रवाई करते हुए पहले ही लगभग 100 करोड़ की संपत्तियों को जब्त कर लिया है। एक अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया, यह कार्रवाई सिर्फ शुरुआत है। बीबीडी ग्रुप के पास अभी भी कई बेनामी संपत्तियां हैं जिनकी पहचान की जा चुकी है। आने वाले दिनों में और ज़ब्ती की कार्रवाई की जाएगी।

सामाजिक और कानूनी सवाल

यह मामला केवल आर्थिक अनियमितताओं का नहीं है, बल्कि यह सामाजिक नैतिकता और कर्मचारी शोषण का गंभीर प्रश्न भी खड़ा करता है। जिन कर्मचारियों के नाम पर ये संपत्तियां दर्ज की गईं, उनमें से कई की आर्थिक हालत बेहद कमजोर है। अब ये लोग खुद भी जांच के दायरे में आ सकते हैं, जबकि असल दोषी तो कोई और है।

अगली कार्रवाई पर नज़र

आयकर विभाग इस पूरे मामले में बड़े स्तर पर बेनामी संपत्ति अधिनियम के तहत कार्यवाही कर रहा है। यदि आरोप सही पाए गए, तो बीबीडी ग्रुप के मालिकों और प्रबंधकों के खिलाफ आपराधिक मामला भी दर्ज किया जा सकता है।

बीबीडी ग्रुप के कर्ताधर्ता

अखिलेश यादव पर टिप्पणी करने में छह सिपाही निलंबित

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखनऊ।सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर फिरोजाबाद के एक सिपाही ने आपत्तिजनक टिप्पणी कर उसे वायरल किया था। इस गलती को कई पुलिसवालों ने दोहराया और टिप्पणी फेसबुक और व्हाट्सएप पर वायरल करते रहे। इस पर समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों की मांग पर एसएसपी ने जांच कराई। सीओ सदर की रिपोर्ट के बाद छह सिपाहियों को निलंबित कर दिया है। सपा जिलाध्यक्ष शिवराज यादव गुरुवार को एसएसपी सौरभ दीक्षित से मिले थे ।

अपनी मर्जी के मुताबिक नहीं पढ़ा सकेंगे सरकारी शिक्षक

» तय समय सारिणी के अनुसार संचालित होंगे परिषदीय स्कूल

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर/लखनऊ। परिषदीय स्कूलों में अब मनमाने तरीके से कक्षाएं नहीं चलेंगी। सभी परिषदीय प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और कंपोजिट स्कूल एक तय समय सारिणी के अनुसार संचालित होंगे। समग्र शिक्षा अभियान के तहत राज्य परियोजना निदेशक कंचन वर्मा ने सभी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिया है कि प्रत्येक विद्यालय में पढ़ाई, गतिविधियों और मध्याह्न भोजन समेत हर कार्य तय समय पर हो।

नया टाइम-टेबल प्रेरणा पोर्टल पर अपलोड कर दिया गया है। विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर समय सारणी को चस्पा किया जाएगा। हर दिन की शुरुआत 15 मिनट की प्रार्थना सभा से होगी। इसमें योग, उपस्थिति गणना और अनुशासन पर फोकस किया जाएगा। साथ ही समाचार का वाचन भी होगा।

बहुत से स्कूल समय सारिणी का सही तरीके से पालन नहीं कर रहे थे। मिड डे मील में अधिक समय लगाते थे। किसी कक्षा की अवधि कम तो किसी कक्षा की अवधि अधिक रखते थे।

खेलकूद को लेकर भी अव्यवस्था रहती थी। अब नए निर्देश के मुताबिक हर कक्षा 40 मिनट की होगा। हर पीरियड की शुरुआत में पिछली कक्षा की पुनरावृत्ति, फिर पाठ पढ़ाना और अंत में संक्षेप में दोहराव जरूरी होगा। यह सुनिश्चित करना प्रधानाध्यापक या इंचार्ज प्रधानाध्यापक की जिम्मेदारी होगी। मिड-डे मील के लिए 30 मिनट निर्धारित किए गए हैं।

बच्चों को बैठाना, भोजन वितरित करना और दोबारा कक्षा में लौटाना इसी में शामिल है। प्रधानाध्यापक स्कूल में मौजूद शिक्षकों को ध्यान में रखते हुए कक्षाएं और विषय बांटेंगे। मासिक पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करना होगा।

पूर्व यूजीसी चेयरमैन डीपी सिंह समेत कई बड़े नाम सीबीआई के घेरे में

मेडिकल कॉलेज मान्यता घोटाला: जांच में पाया है कि यह एक संगठित आपराधिक साजिश का हिस्सा था

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली। मेडिकल कॉलेजों को फर्जी मान्यता देने के मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने बड़ा खुलासा करते हुए कई प्रभावशाली व्यक्तियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। इस गंभीर घोटाले में यूजीसी के पूर्व चेयरमैन डॉ. डी. पी. सिंह, योगी सरकार के पूर्व शिक्षा सलाहकार, और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज के मौजूदा चांसलर को भी जांच के दायरे में लिया गया है।

डॉ. डी. पी. सिंह, जो 2018 से 2021 तक यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (जीटी) के चेयरमैन रह चुके हैं, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के कुलपति भी रह चुके हैं। वर्तमान में वे देश की प्रतिष्ठित संस्था टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस) के चांसलर हैं।

सीबीआई ने अपनी जांच में पाया है कि यह पूरा मामला एक संगठित आपराधिक साजिश का हिस्सा था, जिसमें गोपनीय सरकारी दस्तावेजों की चोरी, फर्जी फैकल्टी और मरीजों की भर्ती, बायोमेट्रिक हेराफेरी और निरीक्षण में मिलीभगत से लेकर रिश्वतखोरी तक की गतिविधियां शामिल थीं। सीबीआई के अनुसार, स्वास्थ्य मंत्रालय के कुछ अधिकारियों ने निरीक्षण रिपोर्ट और वरिष्ठ अधिकारियों की टिप्पणियां निजी संस्थानों तक पहुंचाई। इसके बदले मोटी रकम ली गई। एफआईआर के मुताबिक, 75 लाख रुपये की अवैध राशि राजस्थान में एक हनुमान मंदिर निर्माण में भी इस्तेमाल की गई है।

कौन-कौन है घेरे में

- वीरेंद्र कुमार (गुरुग्राम): एमएआरबी के सदस्य जीतू लाल मीना से घनिष्ठ संबंध, हवाला चैनल से रिश्वत वितरण का आरोप।
- मनीषा जोशी (द्वारका, दिल्ली): डेटा लीक और सौदेबाजी में संलिप्तता।
- सुरेश सिंह भदौरिया (इंडेक्स मेडिकल कॉलेज, इंदौर): कॉलेज के चेयरमैन के रूप में साजिश में भागीदारी।
- मयूर रावल (गीतांजलि यूनिवर्सिटी, उदयपुर): गोपनीय जानकारी के प्रसार में भूमिका।

दक्षिण भारत में भी सक्रिय था नेटवर्क

सीबीआई ने दक्षिण भारत में सक्रिय एक अलग रैकेट का भी भंडाफोड़ किया है, जिसका सरगना बी. हरि प्रसाद (कादिरी, आंध्र प्रदेश) बताया जा रहा है। वह अपने साथियों अंकम रामबाबू (हैदराबाद) और कृष्ण किशोर (विशाखापत्तनम) के साथ मिलकर फर्जी शिक्षकों की नियुक्ति और रिश्वत के माध्यम से मान्यता दिलाने का काम करता था। यह मामला न सिर्फ शिक्षा व्यवस्था की पारदर्शिता पर सवाल उठाता है, बल्कि यह दिखाता है कि कैसे एक संगठित नेटवर्क, सरकारी तंत्र में सेंध लगाकर, देश की भावी पीढ़ियों के स्वास्थ्य और भविष्य से खिलवाड़ कर रहा था। सीबीआई की जांच जारी है और आने वाले दिनों में और बड़े नाम सामने आने की संभावना है।

आदित्य से लव मैरिज
फिर प्रेमी संग भागी ढूंढकर पति ने मारा

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

हाथरस। हाथरस में हुए गौरी हत्याकांड में पुलिस ने पति और दोस्तों के खिलाफरिपोर्ट दर्ज की है। उसके प्रेमी को हिरासत में लिया हुआ है। हाथरस के सहपऊ कोतवाली क्षेत्र के गांव नगला कली में हुई गौरी की हत्या और एक हमलावर के भी मारे जाने की घटना में पुलिस ने मृतका के पति और उसके तीन दोस्तों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। गौरी के पिता की ओर दर्ज कराई गई रिपोर्ट में घटना में मारे गए अमन को भी नामजद किया गया है। पुलिस ने गौरी के प्रेमी करन को भी हिरासत में ले रखा है। रिपोर्ट के अनुसार, गौरी ने साढ़े तीन साल पहले आदित्य उर्फ जीतू के साथ प्रेम विवाह किया था और उसके साथ रह रही थी। उसी दौरान गौरी की करन से मुलाकात हो गई। वह 26 जून को करन के साथ भाग आई। करन अपना गांव छोड़कर अपने मौसा रंजीत निवासी नगला कली में रहने लगा। बृहस्पतिवार की दोपहर आदित्य और उसके तीन साथियों ने नगला कली में आकर गौरी की चाकू से गोद कर हत्या कर दी।

खुलासा

कांग्रेस की 'माई बहिन मान योजना' पर विपक्ष ले रहा चुटकी

सेनेटरी पैड में राहुल गांधी की फोटो लगाने पर सियासी संग्राम

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव की सरगर्मियों के बीच कांग्रेस की ओर से महिलाओं को साधने के लिए शुरू की गई 'माई बहिन मान योजना' अब एक बड़े राजनीतिक विवाद का कारण बन गई है। इस योजना के तहत कांग्रेस ने राज्य की 5 लाख महिलाओं को सैनिटरी पैड वितरित करने की घोषणा की है। खास बात यह है कि इन पैड्स के पैकेट पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी की तस्वीर छपी होगी। कांग्रेस ने प्रत्येक महिला को 2500 रुपये की 'सम्मान राशि' देने का वादा किया है।

बीजेपी ने उठाए गंभीर सवाल : इस योजना की घोषणा के कुछ ही घंटों के भीतर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने इस पर तीखा हमला बोला है। पार्टी की महिला मोर्चा की प्रवक्ता कुंतल कृष्णा ने कांग्रेस पर महिला विरोधी मानसिकता का आरोप लगाते हुए कहा कि, सैनिटरी नैपकिन पर राहुल गांधी की तस्वीर लगाना महिलाओं के सम्मान के खिलाफहै। कांग्रेस यह तक तय नहीं कर पा रही है कि अपने नेता की तस्वीर कहां लगानी चाहिए और कहां नहीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी मानसिक रूप से दिवालिया हो चुकी है और अब राजनीतिक लाभ के लिए महिलाओं की गरिमा तक दांव पर लगाने को तैयार है।

कांग्रेस ने किया बचाव : दूसरी ओर, कांग्रेस ने बीजेपी के आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि यह योजना महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता को लेकर पार्टी की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। पार्टी प्रवक्ता ने कहा कि, राहुल गांधी महिलाओं के अधिकारों के लिए हमेशा खड़े रहे हैं। यह तस्वीर किसी प्रचार के लिए नहीं, बल्कि नेतृत्व के प्रतीक के तौर पर लगाई गई है।

चुनावी रणनीति या मुद्दा भटकाने की कोशिश?

राजनीतिक जानकार इस योजना को कांग्रेस की एक सोच-समझी चुनावी रणनीति मान रहे हैं, जिसका उद्देश्य महिलाओं के बीच पार्टी की पहुंच मजबूत करना है। वहीं बीजेपी इसे मुद्दों से ध्यान भटकाने वाली राजनीति करार दे रही है। अब देखना यह होगा कि 'माई बहिन मान योजना' कांग्रेस के लिए चुनावी लाभ का सौदा बनती है या विपक्ष के हमलों के बीच यह उलटा असर करती है।